राजनेताओं को बुलाने से कार्यक्रम आरंभ होने मे विलम्ब होता है। ऐसे में अगर मेरा कार्यक्रम पहले होता है तो मै कह देता हूं कि मैं थोड़ी देर बजा लेता हूं, जब वे आएंगे तो दीप प्रज्वलन और उद्घाटन की औपचारिकता आप लोग पूरी कर लीजिएगा।' खान साहब अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि हमारे यहां यह बहुत बुरी बीमारी है कि समय पर शुरू तो सभी करना चाहते हैं किन्तु समापन भी समय पर ही हो यह कोई नहीं चाहता है। संगीतकार चाहते हैं कि उन्हे जितना भी गाना बजाना आता है सब कुछ एक ही दिन में सुना दें। कभी कभी ऐसा भी होता है कि संगीतकार अपने स्वर लय की दुनिया में इतना खो जाते हैं कि उन्हें समय का ध्यान नहीं रहता है। इसमे वैसे तो कोई बुराई नहीं है किन्तु कई बार दूसरे लोगों के लिए समस्या खड़ी हो जाती है।

खान साहब अपना एक अनुभव बताते हुए कहते हैं कि 'इसे अन्यथा नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि यह घटना महान गायक उस्ताद अमीर खान साहब से जुड़ी हुई है और मै उनकी बहुत इज्जत करता हूं। उन्हें संगीतकारों का संगीतकार कहा जाता है। अपनी तरह के अकेले गायक थे वे। एक बार दिल्ली के प्रथम उपराज्यपाल ए.एन.झा ने ऑल इंडिया गवर्नर्स डिनर का आयोजन किया था। देश भर के राज्यपाल उसमें आमंत्रित थे। उस अवसर पर संगीत का भी एक छोटा सा कार्यक्रम रखा गया था। झा साहब ने मेरे पिताजी से संगीत भी सीखा था इसलिए मेरे प्रति उनका एक स्वाभाविक लगाव भी था। उस कार्यक्रम में मेरा सरोद और उस्ताद अमीर खान साहब का गाना रखा गया था। उन दिनों मेरे पास गाड़ी नहीं थी इसलिये मुझे लेने के लिए उन्होंने गाड़ी भेजी थी। बड़ी सी इम्पाला गाड़ी थी। उसी गाड़ी से उस्ताद अमीर खान साहब और विदुषी नैना देवी को लेते हुए जब हम राज भवन की ओर जा रहे थे तभी खान साहब ने मुझसे कहा कि बेटा यह कुछ अलग तरह का प्रोग्राम है, इसमे संगीत को गंभीरता से समझने वाले लोग कम ही होंगे इसलिए बस थोड़ा-थोड़ा गाना-बजाना कर लेंगे। मैंने भी आदर के साथ कहा कि जी... जैसी आपकी आज्ञा। चूंकि मैं उम्र में छोटा और अनुभव में नया था इसलिए सबसे पहले मेरी बारी आई और मैं आधा घंटा बजाकर किनारे हो गया। उसके बाद खान साहब ने मंच संभाला और वे जम गए। बैठने की व्यवस्था कुछ ऐसी थी कि सारा प्रकाश कलाकार पर ही पड़ रहा था। खान साहब सुध-बुध खोकर गा रहे थे, हम सब भी आनन्द ले रहे थे। समय जब कुछ ज्यादा ही हो गया तब गवर्नर साहब ने मुझे इशारा किया कि मैं खान साहब को समय समाप्त होने की सूचना दे दूं। मैंने ऐसा करने से विनम्रतापूर्वक मनाकर दिया। तभी खान साहब ने दूसरा राग शुरू कर दिया। अब गवर्नर साहब परेशान! यह देखकर मैंने उनसे इशारे से कहा कि आप अपने मेहमानों को धीरे-धीरे भोजन के लिए ले जाइए और हमलोग संगीत सुनते हैं। धीरे-धीरे सभी लोग भोजन के लिए चले गए। बस हम 8-10 लोग बैठे संगीत का रसास्वादन कर रहे थे... वाह-वाह कर रहे थे। इतने में खान साहब ने तीसरा राग शुरू कर दिया। उधर डिनर भी समाप्त हो गया था कि अचानक जैसे खान साहब को कुछ याद आया और उन्होंने बहुत ही सुंदर तरीके से अपने गायन को विराम देते हुए मुझसे पूछा कि क्या कुछ ज्यादा ही गा गया मैं? मैंने कहा कि नहीं हुजूर बहुत आनंद आया। आनन्द हम लोगों को आया भी था, लेकिन सवाल यह है कि जिन लोगों के लिए वास्तव में वह कार्यक्रम आयोजित हुआ था वे कितने आनंदित हो पाए? इसलिये हमें समय की इज्जत करनी चाहिए क्योंकि जो लोग समय की इज्जत नहीं करते हैं समय भी उनकी इज्जत नहीं करता है।

खां साहब इसी से मिलती जुलती एक और घटना के विषय में बताते हैं, 'बिड़ला में सबसे बड़े घनश्याम दास बिड़ला के 85 वें जन्मदिन के अवसर पर दिल्ली में एक विशेष आयोजन किया गया था जिसमें देश भर के करीब तीन-चार सौ बिड़ला आये हुए थे। बिड़ला साहब का मुझ पर विशेष स्नेह था, इसलिए मेरा कार्यक्रम भी रखा गया था। बिड़ला साहब ने मुझसे कहा कि मुझे बहुत नियम से, डाक्टरों की सलाह पर रहना पड़ता है, इसलिए मैं ठीक 8 बजे उठ जांऊगा जिसका तुम बुरा मत मानना, बाकी लोग तब तक बैठे रहेंगे जब तक तुम बजाओगे। इसलिए तुम अपनी इच्छानुसार बजाना, बस मुझे उठ जाने देना। मैंने भी स्वीकृति में सिर हिला दिया और तय किया कि जब असली आदमी ही सुनने के लिए नहीं होगा तो बजाने की जरूरत भी क्या है? और 8 बजने के 5 मिनट पहले अपने कार्यक्रम को विराम दे दिया जिसका नतीजा यह हुआ कि सबलोग एक साथ भोजन कर पाए, नहीं तो घनश्याम दास जी को अकेले खाना पड़ता और बाकी लोगों को बाद में, जबकि वह आयोजन जिस तरह का था उसमें सब का एक साथ भोजन करना ही उचित था।

परम्परा और प्रयोग

उस्ताद अमजद अली खान का व्यक्तित्व विविधताओं से भरा हुआ है। ये एक परंपरा प्रिय परिवार में जन्मे कलाकार हैं, पारंपरिक साज सरोद बजाते हैं, परम्पराओं का पालन भी करते हैं लेकिन बहुत कड़ाई से नहीं, परंपरा के नाम पर लकीर के फकीर नहीं बन जाते हैं। वे कहते हैं, एक शब्द है, कन्वेंसन दूसरा शब्द है ट्रेडिशन अर्थात् परंपराए। परंपराएं नवीन आविष्कारों के लिए न केवल आज्ञा देती हैं बल्कि प्रोत्साहित भी करती हैं। तभी तो हम विकास कर रहें हैं, लेकिन कन्वेंसन लकीर का फकीर बनाती हैं और मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि हमारे अधिकांश संगीतकार परंपरा के नाम पर लकीर ही पीट रहे हैं, किसी में सवाल पूछने की हिम्मत ही नहीं है बस जो चल रहा है वही चलता जा रहा है लेकिन यह ठीक नहीं है। समय के साथ जब सब कुछ बदलता है तो फिर हमारे विचार क्यों नहीं बदलते?

वे आगे कहते हैं- वह अलग समय था जब रात-रात भर के समारोह हुआ करते थे और एक-एक कलाकार 4 से 5-6 घंटे तक गाता बजाता था। तब संगीत की प्रस्तुति का ढंग अलग हुआ करता था। अब समय बदल गया है, अब 9 बजे के बाद लोग सभागार से निकलना शुरू कर देते हैं और रात्रि 10 बजे के बाद कोई रूकने को

समय का सदुपयोग

मैंने ग्वालियर के सरोद घर में एक कार्यक्रम ऐसा आयोजित किया था जिसमें सभी कलाकारों से अनुरोध किया था कि सिर्फ सुर बजाइए। हर कलाकार को आधे घंटे का समय दिया और कहा कि अलग-अलग तरह की गतें सुनाइये, उनके रचनाकार का नाम बताइए और उस गत की विशेषता बताइए। आप कल्पना कीजिए कि कितनी तरह की गतें उस दिन सुनने को मिली होंगी? उस कार्यक्रम के लिए लोगों ने गतों के विषय में कितना सोचा होगा? कितनी भूली बिसरी गतों को फिर से याद किया होगा? मै जानना चाहता हूं कि आखिर ऐसे अलग-अलग तरह के कार्यक्रम क्यों नहीं आयोजित हो सकते हैं... ? ऐसा ही क्यों होता है बार बार कि स्थाई के मुखड़े के साथ दुखड़ा शुरू हो जाता है?